इंडिया एक्ज़िम बैंक

एक्ज़िम स्पर्श

अंक-4, मार्च 2022

इंडिया एक्ज़िम बैंक
India Exim Bank

टीम स्पर्श

अर्चना मदान
मुख्य प्रशासनिक प्रबंधक

रवि सिंह
सहायक महाप्रबंधक

स्वाति जांगड़ा
मुख्य प्रबंधक

विकास वशिष्ठ
प्रबंधक

रुखसार आलम
प्रशासनिक अधिकारी

पृष्ठ सज्जा
दयानन्द चौरसिया

नई दिल्ली कार्यालय से प्रकाशित ई-पत्रिका
अंक-4, मार्च 2022

ndo.rajbhasha@eximbankindia.in

डिस्क्लेमर: इस ई-पत्रिका में आपकी नज़रों से गुज़रने वाली तस्वीरें इंडिया एक्ज़िम बैंक के किसी न किसी अधिकारी द्वारा ली गई हैं और कोई भी सामग्री इंटरनेट से नहीं ली गई है।

आगे के पृष्ठों पर

03 प्रबंध निदेशक का संदेश

04 उप प्रबंध निदेशक का संदेश

05 प्रकाशकीय

06 पोस्टकार्ड

07 कविता - आज़ाद भारत की पचहत्तरवीं सालगिरह

09 दास्तानः द्विपक्षीय संबंधों की ऐतिहासिक इमारत

11 पारंपरिक मूल्यों की बुनियाद पर आधुनिकता की इमारत

13 विकास 'IDEAS' से साकार होता भारत का साझी समृद्धि का सपना

16 शहर की दौड़-भाग से दूर एक सहर

19 मैं 'रिलीज़' हूं, आपको विशेष रूप से कुछ सूचित करने हेतु उपस्थित हुआ हूं

22 सीक्रेट डायरीज़

26 कविता - क्या डिप्रेशन के भी रंग होते हैं?

28 कहानी - सायमन की समझदारी

30 भारतीय रुपये का मिज़ाज

35 प्रेम, शक्ति और करुणा का रंग लाल

38 ख़ुशियों के क्यूआर कोड

39 हिन्दी का बढ़ता 'थ्रेड'

40 शामियाना बनाने निकले, वो आशियाना बन गया

45 पाठकों के नोट्स : पंक्तियां जो मन पर अंकित हो गईं

47 किंडल-किंडल बात चली है...

'एक्ज़िम स्पर्श' के चौथे अंक के ज़रिए आप सबसे रू-ब-रू होते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। बीते छह महीने न सिर्फ व्यवसाय के लिहाज़ से, बल्कि हिन्दी के क्षेत्र में भी घटनापूर्ण रहे। लिंक्डइन पर हिन्दी में प्रोफाइल बनाने की सुविधा मिल गई। नई शिक्षा नीति आ चुकी है, जिसमें मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा पर ज़ोर दिया गया है।

मैं इन दो प्रमुख घटनाओं का ज़िक्र इसलिए कर रही हूं क्योंकि दोनों घटनाएं अपने आप में बहुत कुछ कहती हैं। लिंक्डइन पर हिन्दी में प्रोफाइल बनाने की सुविधा मिलना बाज़ार की दिशा की ओर संकेत करता है, तो मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा पर बल आने वाले सुनहरे कल की ओर संकेत करता है। क्योंकि वैज्ञानिक अध्ययनों से यह बात साबित हो चुकी है कि बच्चे की स्कूली शिक्षा यदि मातृभाषा में हो तो उसका मानसिक विकास तेजी से होता है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी हिन्दी बढ़ रही है। मध्य प्रदेश में एमबीबीएस की पढ़ाई हिन्दी में होने लगी है। उत्तर प्रदेश में इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिन्दी में हो रही है। भारत सरकार निरंतर प्रयासरत है। सरकार ने भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के लिए उच्चाधिकार प्राप्त समिति भी बनाई है, जिसके अध्यक्ष प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री पद्मश्री श्री चामू कृष्ण शास्त्री हैं, जो संस्कृत के क्षेत्र में सक्रिय रहने के बाद अब भारतीय भाषाओं के उत्थान के लिए काम कर रहे हैं।

आज मैं इन सब उपलब्धियों और प्रयासों की बात इसलिए कर रही हूं, क्योंकि जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं कि यात्रा में हमारी कितनी उपलब्धियां रही हैं, तो आगे की राह आसान लगने लगती है। हमें अभी लंबा रास्ता तय करना है। हमारी यात्रा शुरू हो चुकी है और हम सभी को सोचना चाहिए कि हम व्यक्तिगत और संस्थागत स्तर पर अपनी भाषाओं को बढ़ाने में क्या योगदान दे सकते हैं। 'स्पर्श' इसी दिशा में हमारा छोटा-सा योगदान है और दिल्ली बैंक नराकास द्वारा इसे प्रथम पुरस्कार मिलना, हमें अपने प्रयासों में निरंतरता बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। पुरस्कार के लिए टीम स्पर्श को बधाई।

शुभकामनाओं सहित,

हर्षा बंगारी

(हर्षा बंगारी)
प्रबंध निदेशक

ट्विटर पर हिन्दी का उपयोग अच्छा हो गया है। पिछले दिनों ट्विटर पर एक विदेशी यूनिवर्सिटी में पढ़ा रहे एक भारतीय प्राध्यापक ने लिखा था कि "व्याकरण के ताले लटकते रह जाते हैं और भाषा की अभिसारिका खिड़की के रास्ते अपने प्रिय तक पहुंच जाती है।'' यही भाषा की विशेषता है और यही विशेषता भाषा को जीवित बनाए रखती है।

भाषाएं जीवित रहें, बढ़ती रहें, इसके लिए ज़रूरी है कि हम अपनी भाषा का प्रयोग करें और इसके लिए हमें अपनी भाषा से प्रेम करना पड़ता है। 'एक्ज़िम स्पर्श' में अधिकारियों की रचनात्मकता देखकर मुझे सुखद एहसास होता है कि हमारे अधिकारी भी अपनी भाषा से प्रेम करते हैं। यह ई-पत्रिका मेरे लिए अपने अधिकारियों से संवाद स्थापित करने का एक और माध्यम है।

संस्थाओं की गृह-पत्रिकाएं प्रबंधन के लिए संवाद का माध्यम तो होती ही हैं, संस्था का दर्पण भी होती हैं। उनके ज़रिए किसी संस्था को जानने का अवसर भी मिलता है। इस दृष्टि से जब मैं 'एक्ज़िम स्पर्श' को देखता हूं तो मुझे वह धारणा झूठी जान पड़ती है कि बैंकर नीरस होते हैं।

'स्पर्श' को दिल्ली बैंक नराकास द्वारा प्रथम पुरस्कार मिलना, बैंक के लिए बड़ी उपलब्धि है। इसके लिए मैं 'टीम स्पर्श' को विशेष रूप से बधाई देता हूं।

'स्पर्श' के पिछले अंक पर महामारी का साया था। अब हम उस कठिन समय से बाहर आ चुके हैं। यह सही समय है, हर मोर्चे पर नई शुरुआत करने का। मैं लौटकर फिर वहीं आ रहा हूं, जहां से अपनी बात शुरू की थी। भाषा की प्रगति के मोर्चे पर हम यह कर सकते हैं कि अपने काम, अपना व्यवहार, अपनी भाषा में करें। मैं मूलतः कन्नड़ भाषी हूं और अपने प्रियजनों को कन्नड़ में गर्व से वॉट्सऐप मैसेज लिखता हूं और कार्यालयीन कामों में, जहां तक हो सके, राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करता हूं। मेरा विश्वास है कि हमारे ऐसे ही छोटे-छोटे प्रयासों से ही हमारी भाषाएं समृद्ध होंगी।

शुभकामनाओं सहित,

एन. रमेश

(एन. रमेश)
उप प्रबंध निदेशक

पिछले अंक पर कोविड-19 का साया था। कोविड-19 के विरुद्ध हमारी लड़ाई कारगर रही है और दुनियाभर में भारत सरकार के प्रयासों को सराहा जा रहा है। हमने कई देशों को कोविड-19 के टीके भी निर्यात किए हैं और उन्हें भी कोविड-19 के विरुद्ध युद्ध में मदद की है। बहारहाल! अब हालात में काफ़ी सुधार है और हम फिर से नॉर्मल की ओर बढ़ रहे हैं।

इस अंक के बारे में आपसे कुछ कहूं, इससे पहले मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूं, दिल्ली बैंक नराकास का, निर्णायक मंडल का, जिन्होंने 'एक्ज़िम स्पर्श' को ई-पत्रिकाओं की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार के योग्य पाया और चुना। मैं आभारी हूं हमारी प्रबंध निदेशक और उप प्रबंध निदेशक का, जिन्होंने हमेशा अभिनव प्रयोगों के लिए हमें प्रेरित किया।

इस पुरस्कार से प्रेरित होकर मुझे यह नया अंक आपसे साझा करते हुए ख़ुशी हो रही है। और आपको जानकर ख़ुशी होगी कि इस अंक के साथ हम ख़ुशियों की पुड़िया भी लाए हैं, जो आपको आगे के पन्नों में मिलेगी।

यह इस ई-पत्रिका का चौथा अंक है और इसी के साथ हम नए वित्तीय वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। नए वित्तीय वर्ष के साथ नई आशाएं हैं, नई संभावनाएं हैं। हम अपने कामकाज में कुछ नया करते रहें तो जीवन में नयापन बना रहता है। आपको इस अंक में भी कुछ नयापन मिलेगा।

यह सुखद संयोग है कि यह अंक ऐसे समय में आ रहा है, जब हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। इसीलिए इसकी शुरुआत भी 'आज़ाद भारत की पचहत्तरवीं सालगिरह' के साथ हो रही है, यह हमारे लिए गौरव की बात है। इस अंक में आप पढ़ेंगे, 'दास्तान: द्विपक्षीय संबंधों की ऐतिहासिक इमारत' की। जानेंगे प्रेम, शक्ति और करुणा के रंग लाल' के बारे में। इस अंक में आपको भारतीय रुपये का मिज़ाज भी दिखेगा, तो किताबों की नई आमद भी मिलेगी।

आशा है, पिछले अंकों की तरह यह अंक भी आपको पसंद आएगा। हमें आपके पोस्टकार्ड्स का इंतज़ार रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

निर्मित वेद
महाप्रबंधक

मन को स्पर्श कर गए, मन के ये बोल

"एक्ज़िम स्पर्श" पत्रिका का नाम जितना प्रवाहपूर्ण और "स्पर्शी" उतना ही स्पर्शी पत्रिका का कथ्य, तथ्य और पथ्य है। "एक्ज़िम स्पर्श" से परिचय लगभग दो वर्ष पूर्व हुआ। प्राय: हिंदी पत्रिकाएं "औपचारिक-सी" होती हैं, लेकिन "एक्ज़िम स्पर्श" नए मानदंड स्थापित करती दिखाई देती है।

स्पर्श के विषय आर्थिक मात्र नहीं है। पत्रिका बहुविध और बहुआयामी विषयों को अपने में समेटे हुए है। पत्रिका के लेखों का संकलन उनकी भाषा केवल शुद्ध ही नहीं अपितु प्रवाहपूर्ण, सरल, सहज, हृदयग्राही और स्पर्शी होती है। "शब्दों की आत्मकथा" स्तंभ शब्दों के अर्थों से ही नहीं शब्दों की आत्मा से पाठक को जोड़ देते हैं। सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्योग को ध्यान में रख कर सम्मिलित लेख यह अनुभूति कराते हैं कि एक्ज़िम बैंक देश के सीमांत व्यक्ति तक तरक्की की लौ को प्रज्ज्वलित करने के लिए प्रतिबद्ध है। लोकल वोकल, आत्मनिर्भर भारत, निर्यात जैसे विषयों पर एक्ज़िम बैंक की देश के उन्नति में योगदान की नीति की झलक दिखाई देती है। "एक्ज़िम स्पर्श" का "स्पर्श" करते हुए मेरा हृदय स्पंदित है। टीम स्पर्श को साधुवाद।

- अनुज राज पाठक, शिक्षक और शोधार्थी

स्पर्श की अपनी भाषा होती है। उसके अपने संवाद होते हैं। और हर भाषा, हर संवाद का अपना अर्थ होता है। मिसाल के तौर पर कक्षा में बदमाशियां करने वाले बच्चे को उसकी टीचर जब एक स्पर्श देती है, तो वह उस बच्चे के लिए एक सबक का अर्थ देता है। और टीचर जब अपने छोटे अबोध बच्चे को स्पर्श देती है तो उसका अर्थ स्नेह होता है। अपनापा होता है। ऐसे ही है, एक्ज़िम बैंक की यह पत्रिका, 'स्पर्श'। हर उस शख़्स को अपनापा, अपना-सा कुछ न कुछ अर्थ देती हुई, जो इसके संपर्क से गुज़रता है। निश्चित रूप से इस तरह के समग्र सार्थक प्रयास के लिए 'स्पर्श' की टीम को अनेकों बधाइयां दी जानी चाहिए। शुभकामनाएं।

- नीलेश द्विवेदी, वरिष्ठ पत्रकार

स्पर्श का यह अंक बहुत ही ख़ूबसूरत बन पड़ा है। ई-पत्रिका का स्वरूप और नाम, दोनों सार्थक जान पड़ते हैं। मोबाइल डिवाइस पर पढ़ने में आसान और मन को स्पर्श करने वाली सामग्री। रोचक कलेवर और ताज़ादम लेआउट। वाकई पत्रिका स्क्रॉल करते हुए बढ़ते रहते हैं और समय कब निकल जाता है, पता नहीं चलता। सामग्री में विविधता इसे समृद्ध बनाती है। सीक्रेट डायरीज़ और बैंकर की डायरी जैसे पन्ने बैंकर की संवेदनाओं से परिचय कराते हैं। प्राय: गृह पत्रिकाओं से यह शिकायत रहती है कि उनमें तकनीकी आलेख नहीं होते, स्पर्श इस शिकायत को भी दूर करती है। टीम को बधाई।

- स्वरूप चक्रवर्ती, सहायक महाप्रबंधक, एक्ज़िम बैंक

मैंने इंडिया एक्ज़िम बैंक की गृहपत्रिका पढ़ी। अच्छी लगी। पहली ख़ास बात कि इसे फोन पर आसानी से पढ़ा जा सकता है। दूसरी, इसकी आसान और ख़ूबसूरत भाषा हर पैरा के साथ अगला कंटेंट पढ़ने के लिए निरंतर प्रेरित करती है। इसमें ऐतिहासिक इमारतों की आंतरिक जानकारी और सुंदरता का ज़िक्र पढ़कर अच्छा लगा। बैंक के कार्यक्रम के बारे में बताते हुए जिस सरल भाषा का इस्तेमाल किया गया है, उसे पढ़कर यह धारणा टूटती नज़र आई कि 'बैंकिंग को हिन्दी में समझना बहुत मुश्किल है'। 'बैंकर की डायरी' और 'पंजाब' भी बेहद ख़ास लगे।

- संध्या, हिन्दी संपादक, प्रथम बुक्स

इस वॉट्सऐप या ईमेल आइकन पर क्लिक कर दीजिए अपनी प्रतिक्रियाएं, हमें इंतज़ार रहेगा...

आज़ाद भारत की पचहत्तरवीं सालगिरह

आज़ाद भारत की हर सालगिरह
सब पीढ़ियां इस तरह मनाती हैं
स्वतंत्रता सेनानियों की शहादत पर
सभी आँखें भर आतीं हैं

75 बरसों की उपलब्धियां
गिनने का शुभ अवसर आया है
मगर आज देखो तो ज़रा
इंसानों के चेहरों पर दोहरे मास्क हैं और
प्रकृति ने कैसा बवंडर रचाया है

इतिहास गवाह रहा अंग्रेज़ी शासन के तंत्र का
फ़ायदा उठाया जिसने फूट डालकर राज करने के मंत्र का
75 बरसों से हम अंग्रेज़ी हुकूमत की ग़ुलामी से आज़ाद हैं
मगर आजकल आंतरिक मतभेदों से देश की गरिमा बर्बाद है

75 बरसों से सहेज कर रखी
अपनी संस्कृति की आत्मा पर
आजकल कुहासा सा छाने लगा है
रोबोटिक पीढ़ी के सपनों में भी अब
मोबाइल वॉट्सऐप फ़ेसबुक इंस्टाग्राम ट्विटर
और वर्चुअल संबंधों का खुमार छाने लगा है

चूक किस से हुई कौन जाने
आजकल सब अपनी आज़ादी के दीवाने
हर एक व्यक्ति की मानसिकता से प्रभावित
घर गली गाँव शहर समाज और देश है
पूरब के निवासियों का पश्चिमी परिवेश है

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खुलेआम उल्लंघन क़ानूनों का
टूटा रिश्ता मांस से नाखूनों का
क्यूँ न विचार करें भूले बिसरे संस्कारों का
राजनीति संसद तक ही रहने दें और
जमकर लुत्फ़ उठाएं प्रकृति के दिए
नि:स्वार्थ प्रेम के उपहारों का

आपसी बैर भाव सब भुला दें
संस्कृति को चिरायु रहने की दुआ दें
विदेशी वस्तुओं और वस्त्रों का त्याग करें
और स्वदेशी खादी अपनाएं
ईर्ष्या द्वेष की ग़ुलामी से मुक्त होकर
वास्तविक आज़ादी का जश्न मनाएं।

अर्चना मदान
मुख्य प्रशासनिक प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

दास्तानः द्विपक्षीय संबंधों की ऐतिहासिक इमारत

गाम्बिया का संसद भवन

"यह ऐतिहासिक पल है। 400 साल के ब्रिटिश शासन के बाद देश को अपना सदन मिला है। यह जनप्रतिनिधियों का सदन है। इसे ऐसा ही होना चाहिए था, ताकि वे देश के लिए बेहतर काम कर सकें।

– **याह्या जाम्मेह**, पूर्व राष्ट्रपति, गाम्बिया

गाम्बिया के तत्कालीन राष्ट्रपति याह्या जाम्मेह की अक्टूबर 2014 में कही गई यह बात अपने आप में पूरी दास्तान बयां करती है। गाम्बिया को आज़ादी मिली 1965 में, पर संसद के लिए भवन मिला साल 2014 में। इससे पहले, गाम्बिया की संसद की कार्यवाही 50 साल तक ब्रितानियों के लिए बने क्लबहाउस में ही चलती रही थी। यह क्लबहाउस ख़ास तौर पर उनके खाने-पीने के लिए बनाया गया था।

भारत सरकार की सहायता से गाम्बिया सरकार को दी गई 27 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था से राजधानी बांजुल में बना संसद भवन, आज न सिर्फ़ देश की 'शक्तिपीठ' है, बल्कि आकर्षक पर्यटन केंद्र भी है। यह तीन मंज़िला संसद भवन 4,468 वर्ग फुट में बना है। इसमें असेंबली हॉल के अलावा, दर्शक दीर्घा, भव्य पुस्तकालय और ऑडिटोरियम भी है। इसे कुछ ऐसे बनाया गया है कि दिन में कुदरती तौर पर उजाला रहे। दूसरे देशों के साथ संबंधों को प्रगाढ़ करने के मक़सद से होने वाले अहम सम्मेलन भी यहीं होते हैं। भारत और गाम्बिया में अच्छे संबंध रहे हैं। और यह ऐतिहासिक इमारत इन प्रगाढ़ संबंधों की दास्तां बयां करती है।

ऋण-व्यवस्था क्या है?

भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाने, विशेष रूप से विकासशील देशों के साथ भारत के व्यापार और आर्थिक संबंधों को बढ़ाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने वित्तीय वर्ष 2003-04 के अपने बजट में भारत विकास पहल की घोषणा की थी। फिर जुलाई 2015 में इसे भारतीय विकास और आर्थिक सहायता योजना (आयडियाज़) नाम के साथ नए रूप में पेश किया गया। 7 दिसंबर, 2015 को दिशानिर्देश जारी किए गए। भारत सरकार की ओर से एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यावस्थाएं इन्हीं दिशानिर्देशों के आधार पर प्रदान की जाती हैं। मार्च 2022 में इन दिशानिर्देशों में पुनः संशोधन किया गया और संशोधित दिशानिर्देश लागू हैं।

गाम्बिया के साथ भारत का द्विपक्षीय व्यापार

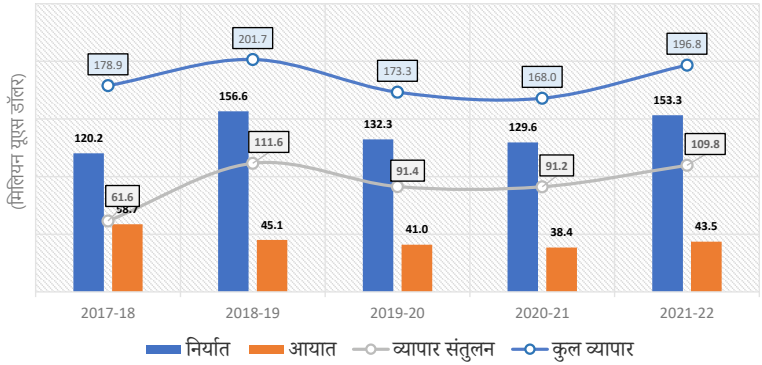

गाम्बिया को भारत से निर्यातित प्रमुख उत्पाद

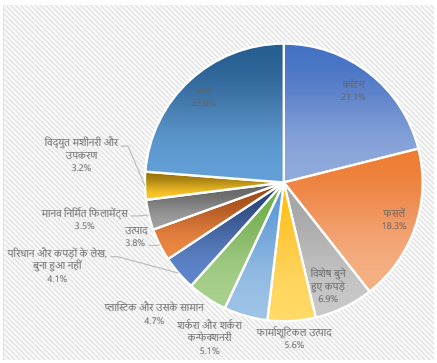

गाम्बिया से भारत द्वारा आयातित प्रमुख उत्पाद

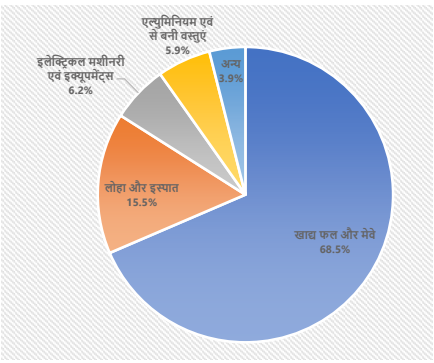

पारंपरिक मूल्यों की बुनियाद पर आधुनिकता की इमारत

घाना का राष्ट्रपति भवन

स्वतंत्र घाना का अपना राष्ट्रपति भवन। पारंपरिक होते हुए भी आधुनिक। इस इमारत के साथ देश के इतिहास का नया अध्याय लिखा गया है। 50 साल बाद देश को अपना राष्ट्रपति भवन मिला है। 2006 में घाना के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री जॉन कुफुओर ने इस परियोजना की नींव रखी थी। इंडिया एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्था के जरिए 2008 में इसका काम पूरा हुआ।

इसमें घाना आने वाले राष्ट्राध्यक्षों के ठहरने की भी व्यवस्था है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रमुख मंत्रियों के कार्यालयों के साथ-साथ क्लीनिक, रेस्त्रां, बैंक, डाकघर, और फायर सर्विस पोस्ट, बैंक्वेट हॉल, अत्याधुनिक संचार सुविधाओं से लैस कॉन्फ्रेंस कक्ष, 200 से ज़्यादा कर्मचारियों के लिए कार पर्याप्त पार्किंग तक सब है। मुख्य ऑफिस कॉम्प्लेक्स 'असांते गोल्डन स्टूल' की भांति दिखाई देता है, जो घाना साम्राज्य के संस्थापन का प्रतीक है। इसकी इमारतें ऊर्जा-क्षम हैं। बाहरी दीवारों पर एल्युमिनियम की परत लगी है और भीतर की ओर शीशा है, जो ठंडक बनाए रखता है।

बीते युग की दास्तां कहता फ्लैगस्टाफ हाउस

पुराना राष्ट्रपति भवन 'फ्लैगस्टाफ हाउस' अब हेरिटेज स्थल हो गया है, जो बीते युग की दास्तां कहता है। यह भारत-घाना के मधुर संबंधों और तत्कालीन राष्ट्रपति कुफुओर की आर्थिक कूटनीति की सफलता को दर्शाता है। इस परियोजना के जरिए भारतीय कंपनियां घाना के बाजारों में कदम रख पाईं और अफ्रीका में उनकी लोकप्रियता बढ़ी।

घाना के साथ भारत का द्विपक्षीय व्यापार

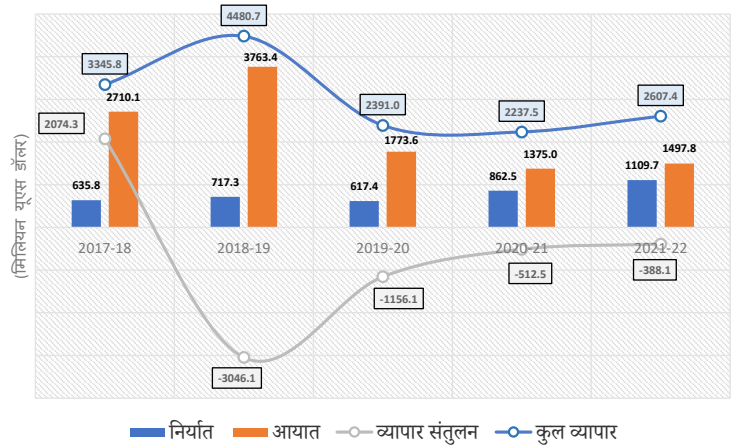

घाना को भारत से निर्यातित प्रमुख उत्पाद

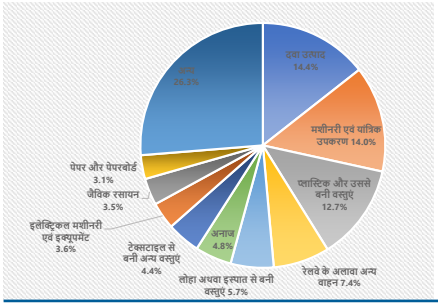

घाना से भारत द्वारा आयातित प्रमुख उत्पाद

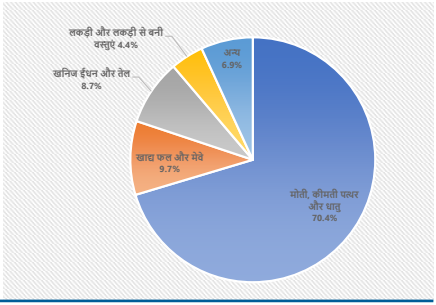

रोहन शर्मा
सहायक महाप्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

विकास 'IDEAS' से साकार होता भारत का साझी समृद्धि का सपना

- आयडियाज़ (IDEAS) यानी भारतीय विकास और आर्थिक सहायता योजना
- आयडियाज़ दिशानिर्देशों के तहत ही प्रदान की जाती हैं बैंक द्वारा ऋण-व्यवस्थाएं

भारत पचहत्तर साल की अपनी यात्रा में, मित्र देशों के विकास में एक विश्वसनीय साथी बनकर उभरा है। भारत का सपना है, साझी समृद्धि। और इसे साकार करते हुए भारत विकासशील देशों के विकास में सहयोग कर रहा है। यह संभव हुआ है, भारत सरकार की भारतीय विकास और आर्थिक सहायता योजना से। आयडियाज़ के तहत एक्ज़िम बैंक द्वारा ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जाती हैं। इनके ज़रिए भारत विकासशील देशों के साथ अपने विकास का अनुभव साझा करता है।

भारत सरकार समर्थित ऋण-व्यवस्थाओं के जरिए भारत मित्र देशों को:

i) सामाजिक, आर्थिक और बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं;

ii) द्विपक्षीय व्यापार; और

iii) क्षमता विकास व कौशल हस्तांतरण के लिए सहयोग देता है।

आज, आयडियाज़ के तहत 66 देशों में लगभग ढाई लाख करोड़ रुपये की 307 रियायती ऋण-व्यवस्थाएं हैं। भारत सरकार ने 2003-04 में भारतीय विकास पहल (IDI) के नाम से यह योजना शुरू की थी, जिसे 2015 में बाकी संशोधनों के साथ **"आयडियाज़ दिशानिर्देश"** नाम दिया गया और समय के बदलते हालात और भू-राजनीतिक परिस्थिति के कारण आयडियाज़ में बदलाव एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसी के चलते मार्च 31, 2022 में भारत सरकार ने इन दिशानिर्देशों में कुछ परिवर्तन किए हैं। इनसे परियोजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में मदद मिलेगी। एक नज़र, ऐसे ही महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों पर:

पहले	अब
गैर-परिचालनगत ऋण-व्यवस्थाओं का स्वत: समापन	
■ अनुमोदन की तारीख से 18 महीने तक करार न होने पर ऋण-व्यवस्था स्वत: समाप्त।	■ अनुमोदन की तारीख से 12 महीने तक करार न होने पर ऋण-व्यवस्था स्वत: समाप्त हो जाएगी।
■ भारत सरकार के अनुमोदन से 06 महीने की अवधि के लिए बढ़ाने का प्रावधान।	■ अनुमोदन की तारीख से 24 महीने में करार न किए जाने पर ऋण-व्यवस्था स्वत: समाप्त हो जाएगी।
कॉन्ट्रैक्ट को अंतिम रूप देना, कॉन्ट्रैक्ट प्रदान करना	
■ करार करने के 18 महीने के अंदर कॉन्ट्रैक्ट को अंतिम रूप देना ज़रूरी।	■ करार होने के 18 महीने के अंदर कम से कम एक कॉन्ट्रैक्ट को ऋण-व्यवस्था में शामिल करना ज़रूरी, अन्यथा ऋण-व्यवस्था निरस्त मानी जाएगी।
■ इसमें विफल होने पर ऋण-व्यवस्था निरस्त, तथापि भारत सरकार द्वारा इसकी अवधि बढ़ाने का प्रावधान।	
अब नए दिशानिर्देशों में यह नया प्रावधान भी शामिल	
■ ऋण-व्यवस्था करार होने के 48 महीने के भीतर ऋण-व्यवस्था में सभी कॉन्ट्रैक्ट शामिल किए जाने चाहिए।	
■ ऐसा न होने पर 48 महीने बाद ऋण-व्यवस्था की शेष अनावंटित राशि इस अवधि के अंत में समाप्त हो जाएगी।	
संवितरण की अंतिम तिथि	
■ ऋण-व्यवस्था की टर्मिनल संवितरण तिथि परियोजना की निर्धारित समाप्ति तिथि के 60 महीने बाद होगी।	■ टर्मिनल संवितरण की अंतिम तिथि, वाणिज्यिक परिचालन की निर्धारित तिथि से 48 महीने तक होगी।
■ उसके बाद यानी 60 महीने की अवधि समाप्त होने पर, अप्रयुक्त कॉन्ट्रैक्ट का हिस्सा रद्द कर दिया जाएगा।	■ उसके बाद यानी 48 महीने की अवधि के बाद अप्रयुक्त कॉन्ट्रैक्ट के हिस्से की राशि रद्द माना जाएगा।
मूल्यांकन और समीक्षा	
उधारकर्ता सरकार को प्रदत्त ऋण-व्यवस्था के दीर्घावधि लाभों के बारे में दूतावास भारत सरकार को सूचित करे।	दूतावास द्वारा यह सूचना ऋण-व्यवस्था के तहत परियोजनाएं पूरी होने पर और करार के 5 साल बाद दी जाएगी।

पहले	अब
डीपीआर तैयार करना	
■ ऋण-व्यवस्था के अनुमोदन से पहले यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPR) छह महीने से अधिक पुरानी न हो।	■ ऋण-व्यवस्था के अनुमोदन से पहले यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPR) बारह महीने से अधिक पुरानी न हो।

आयडियाज़ दिशानिर्देश 2022 में जोड़े गए नए खंड

- केरिबियाई देश आयडियाज़ 2022 के भाग बी के तहत, रियायती वित्तपोषण योजना (सीएफएस) को भी शामिल कर लिया गया है, जिसके लिए पहले अलग दिशानिर्देश थे।
- ऋणदाता बैंक या उसके द्वारा नियुक्त स्वतंत्र एजेंसी, ऋण-व्यवस्था की राशि का 0.50% तक का प्रयोग परियोजना के मूल्यांकन के लिए कर सकते हैं।
- परियोजना निष्पादन अवधि पूरी होने के बाद उधारकर्ता सरकार को 3 से 5 साल के लिए व्यापक रखरखाव कॉन्ट्रैक्ट करना होगा।

अन्य परिवर्तन : देशों का वर्गीकरण

- ग्रेनेडा को श्रेणी-I से श्रेणी-III में शिफ्ट कर दिया गया है।
- आर्मेनिया, जॉर्जिया और समोआ को श्रेणी-II से श्रेणी-III में शिफ्ट कर दिया गया है।
- अंगोला को श्रेणी-III से श्रेणी-II में शिफ्ट कर दिया गया है।
- स्वाज़ीलैंड को उसके नए नाम "एस्वातिनी" के तहत श्रेणी-II में रखा गया है।
- विदेश मंत्रालय की सलाह पर कोसोवो देश को सूची से हटा दिया गया है, क्योंकि भारत औपचारिक रूप से कोसोवो को मान्यता नहीं देता है।

मीना कुमारी
उप प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

शहर की दौड़-भाग से दूर एक सहर

जाते हुए साल 2021 का जाता हुआ-सा सप्ताह था। ख़बर मिली कि दफ़्तर से पिकनिक की योजना बन रही है। कोविड-19 के जाने जैसी ख़बरें भी चल रही थीं। इस आते हुए साल की तमाम उदासियां भी जाती हुई-सी प्रतीत हो रही थीं। ऐसे में पिकनिक की सूचना नई उमंग-सी लेकर आई। दफ़्तर में चाय पर चर्चा चल रही थी कि कौन जा रहा है, कौन नहीं। दो साल से कोई कहीं नहीं गया था। बच्चे भी घर में कैद होकर रह गए थे। सो, मन सबका था। मेरा भी था। लेकिन असमंजस में थी कि जाऊं या नहीं।

फिर भी जाने के छत्तीस कारण थे, तो न जाने के ख़याल के पीछे भी एक कारण था। दरअसल, जिस दिन पिकनिक जाना था, उसी दिन मेरा जन्मदिन भी था। और ऊहापोह इसी बात की थी कि अबकी बार यह दिन पूरे परिवार के साथ मनाऊं या दफ़्तर के साथियों के साथ। साथियों से ही चर्चा की। सबके प्यार के आगे नहीं जाने का ख़याल भी चला गया।

पिकनिक की जगह तय हुई दिल्ली से महज़ 50-55 किलोमीटर दूर मानेसर। मानेसर का हेरिटेज विलेज रिज़ॉर्ट। तय तारीख को सबको एक जगह इकट्ठा होना था। सब एक ही बस से जो जाने वाले थे। अपने साथियों के साथ एक ही बस में बैठना अपने आप में मज़ेदार होता है। उसमें अगर बच्चों का शोर-गुल मिल जाए तो सफ़र और भी मनोरंजक हो जाता है। यह यात्रा इसलिए और भी यादगार हो गई क्योंकि दो साल में यह पहला मौका आया था, जब हर कोई पहली बार घर से बाहर निकल रहा था। ख़ास तौर पर बच्चे। दफ़्तर के लिए बाहर निकलना, बाहर निकलने जैसा कहां होता है। बस में ही स्वादिष्ट नाश्ता करते, गप्पे मारते, बच्चों के साथ खेलते हुए डेढ़ घंटे में हम पहुंच गए मानेसर। वहां पहुंचते ही बच्चों को तो जैसे पंख लग गए।

सबने अपने-अपने खेलने की जगह ढूंढ़ ली और खेलने में व्यस्त हो गए। दिल्ली में दिसंबर का महीना ठीक-ठाक सर्द होता है। और ऐसी सर्द सुबह का स्वागत अगर गरमागरम चाय-पकौड़ों से हो तो सर्दी का मज़ा बढ़ जाता है। फिर टीम बिल्डिंग की रोचक गतिविधियों से सर्दी काफ़ूर भी हो जाती है।

बच्चों के लिए मनोरंजक खेल और खेल के बाद सबको उपहार। बच्चों को और चाहिए भी क्या। खेलने को भी मिले और खेलने के बदले में आकर्षक उपहार भी मिलें। ये तो उनके लिए सोने पे सुहागा जैसा था। तीन घंटे में सारे खेल हो गए। अब था शाम का इंतज़ार। क्योंकि इस शाम होना था बहुत कुछ ख़ास।

सर्दियों में सूरज जल्दी डूब जाता है और आज की शाम तो कुछ और जल्दी ढल गई। अलाव जल उठे। लोग घेरा लगाकर बैठ गए। ढोल बजने लगा। 'गांव' सजने लगा। फरमाइशें होने लगीं और महफ़िल सज गई। सबने अपने पसंदीदा गीत गाए। नाचे-कूदे। मेरे लिए इस शाम का सबसे चौंकाने वाला पल अभी बाक़ी था। माइक पर एक उद्घोषणा हुई। मेरा नाम पुकारा गया। जन्मदिन की शुभकामनाओं के साथ। और फिर मैंने केक काटा। मैं ऐसा सोच

भी नहीं सकती थी कि मेरा जन्मदिन इतना ख़ास हो जाएगा। इसकी यादें ताउम्र मेरे साथ रहेंगी।

यादों के पिटारे में अगले दिन का शामिल होना अभी बाकी था। रात गहरा गई थी। बच्चों के चंदा मामा उन्हें कह रहे थे कि अभी सूरज चाचू के साथ और खेलना है। जाकर आराम करो। अगली सुबह किड्स ज़ोन जाना था। बहुत सारे दूसरे खेल भी खेलने थे। बड़ों को भी रिज़ॉर्ट के मैदान में जाना था। ये सब हुआ और सबने जमकर मौज-मस्ती की। बड़ों का जैसे बचपन लौट आया था। और घर लौटने का समय भी हो गया था।

सवेरे के नाश्ते से लेकर दोपहर के भोजन तक सब इतना अच्छा था कि दो साल की सब उदासियां, दो दिन में जाती रहीं। सब अपनी-अपनी बस में बैठकर दफ़्तर की ओर रवाना हुए। ये सम्मिलन इतना सुंदर था कि सबको एक-दूसरे के परिवार को भी जानने-समझने का मौका मिला। एक्ज़िम परिवार का ये जुड़ाव और गहरा हो गया। और दौड़-भाग भरी आजकल की जीवनशैली में ज़िंदगी को ठहरकर देखने का मौका भी मिला। शहर की दौड़-भाग से दूर, ये सहर सुहानी थी।

शालिनी वर्मा
प्रशासनिक अधिकारी, नई दिल्ली कार्यालय

मैं 'रिलीज़' हूं, आपको विशेष रूप से कुछ सूचित करने हेतु उपस्थित हुआ हूं

शब्दों की आत्मकथा में इस बार अंग्रेज़ी का शब्द RELEASE अपनी कहानी कह रहा है। ये 'रिलीज़' अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद की प्रक्रिया में अलग-अलग अर्थों में इस्तेमाल होता है। बहुधा अनुवाद में इसके अर्थ बदलते रहते हैं। अख़बारों से लेकर कार्यालयीन अनुवाद तक में इसका प्रयोग होता है और बहुत लोग अंग्रेज़ी वाक्य में इसका प्रयोग देखकर हिन्दी में इसके उपयुक्त विकल्प के लिए संघर्षरत रहते हैं। इसी क्रम में RELEASE और इसके हिन्दी समानार्थी अपनी दास्तां बयां करने के लिए उपस्थित हुए हैं। सुनिए:

फ़िल्म आनंद का ये गीत, गुलज़ार के बोल, मुकेश की आवाज़ और सलिल चौधरी का संगीत। आप कहेंगे मैं यहां इसकी बात क्यों करने लगा। तो ग़ौर कीजिए। मैं RELEASE हूं। सप्तवर्णी। अंग्रेज़ी में किसी भी दूसरे शब्द के साथ जोड़ा जाऊं, मुझे नहीं बदला जाता। मैं संज्ञा हो जाऊं या क्रिया, 'सप्तवर्णी' ही रहता हूं। इन्हीं सात वर्णों वाला। लेकिन हिन्दी में अलग-अलग रंग बिखेरता चलता हूं।

सप्तवर्ण यानी सात रंग। जैसे सूर्य के प्रकाश में सात रंग होते हैं, उन्हें अलग-अलग नामों से और भिन्न-भिन्न रूपों में जाना जाता है, वैसे ही हिन्दी में मुझे अलग-अलग तरह से जाना जाता है। मैं अंग्रेज़ी में जितनी तरह से इस्तेमाल किया जाऊं, बदलता नहीं हूं। यानी हर संदर्भ के साथ मेरी वर्तनी यही रहती है। लेकिन हिन्दी में संदर्भ के साथ मेरे अर्थ बदलते जाते हैं और अर्थ का भाव व्यक्त करने के लिए शब्द भी बदलते जाते हैं।

विज्ञप्ति यानी कोई विशेष सूचना

एक शब्द के रूप में तो मैं पुल्लिंग हूं, लेकिन किसी दूसरे शब्द से जुड़कर स्त्रीलिंग भी हो जाता हूं। जैसे प्रेस के साथ जुड़कर 'प्रेस रिलीज़' हो जाता

हूं। हिन्दी में सब इसे 'प्रेस विज्ञप्ति' के नाम से जानते हैं। विज्ञप्ति के मूल में संस्कृत की 'ज्ञ' धातु है। इसका अर्थ होता है, जानना और जानने के मूल में होती है सूचना। प्रेस वाले रिलीज़ के लिए विज्ञप्ति का इस्तेमाल इसीलिए होता है क्योंकि प्रेस विज्ञप्ति जारी करने वाली संस्था या व्यक्ति द्वारा सूचना दी जाती है। वे चाहते हैं कि जो सूचना दी जा रही है, वह जन-जन तक पहुंचे और लोग उसे जानें। अब देखिए, अंग्रेज़ी में प्रेस रिलीज़ को भी रिलीज़ किया जाता है। लेकिन हिन्दी में प्रेस विज्ञप्ति जारी होती है।

आगे देखिए छह और रंग

(i) अंग्रेज़ी में फ़िल्म भी रिलीज़ होती और किताब भी। यहां भी भाव वही है, जन-जन तक पहुंचाने का। हिन्दी में फ़िल्म तो रिलीज़ होती है, पर किताब का विमोचन होता है।

उसका लोकार्पण होता है। हमारे बैंक में अलग से एक शोध एवं विश्लेषण समूह है, जो बहुत से शोध अध्ययन करता है। अंग्रेज़ी में ये सब शोध अध्ययन 'रिलीज़' होते हैं, लेकिन हिन्दी में उनका 'विमोचन' ही किया जाता है।

(ii) अंग्रेज़ी में क्रोध भी रिलीज़ होता है। कोई गाव-तकिये को घूसे मारकर 'ANGER RELEASE' करता है, तो कोई पंचिंग बैग को। लेकिन हिन्दी में तो ग़ुस्सा 'निकाला' या 'उतारा' जाता है। वैसे भी, ग़ुस्सा सेहत के लिए हानिकारक है, जितना जल्दी निकाल दिया जाए, उतना अच्छा। हां, ग़ुस्सा उतारने वाली स्थिति थोड़ी ख़राब होती है। जिस पर उतर रहा होता है उसके दिमाग़ से टेंशन रिलीज़ होने के बजाय घुस जाती है।

(iii) ऐसे ही टेंशन होती है। आजकल ये बीमारी बचपन से ही होने लगी है। और इतनी लोकप्रिय हो गई है कि हर कोई कहता फिरता है, बहुत टेंशन है रे लाइफ़ में। बच्चों को परीक्षा की टेंशन। अख़बार के रिपोर्टर को ख़बर की टेंशन। बैंकर को रिकवरी की टेंशन। और रिकवरी हुई नहीं कि टेंशन 'रिलीज़'। लेकिन हिन्दी में टेंशन 'दूर' होती है।

(iv) लेकिन अगर आपसे कोई ग़लती हो गई हो। अगले दिन दफ़्तर पहुंचते ही सवेरे-सवेरे बॉस बुला लें कैबिन में। 20 मिनट बाद आप बाहर आएं और आपकी ग़लती पकड़ी ही न गई हो तो टेंशन रिलीज़ हो गई है।

(v) अच्छा! अंग्रेज़ी में तो फैक्टरियां, गाड़ियां सब कार्बन-डाई-ऑक्साइड 'रिलीज़' ही करती हैं, पर हिन्दी में 'छोड़ती' हैं। महानगरों की सबसे बड़ी समस्या। लेकिन महानगर अभिशप्त हैं। प्रदूषित बने रहने को।

(vi) एक और उदाहरण देख लीजिए। किसी संस्था में किसी व्यक्ति को उसके कार्य दायित्वों से हटा दिया जाए तो अंग्रेज़ी में प्रबंधन कहता है, ''The Management has agreed to release two of its members from their duty.'' और फिर उन्हें 'रिलीव' कर दिया जाता है। लेकिन हिन्दी में कार्यमुक्त ही किया जाता है।

विकास वशिष्ठ
प्रबंधक, प्रधान कार्यालय

डायरियां प्रायः सीक्रेट और हमारी राज़दार होती हैं। जो बातें हम किसी से नहीं कर सकते, वो डायरी से करते हैं। डायरी हमारे एहसासों की ही सदूंक नहीं होती, बल्कि दिल के संदूक के ताले की चाभी भी होती है। आपको याद होंगी वो तमाम डायरियां, जिनमें हम कभी ताले लगाकर रखते थे। केवल इसलिए कि कोई उन्हें पढ़ न ले। यहां सीक्रेट डायरीज़ आपको अपने ऐसे ही दौर में लेकर जाएंगी, जहां जीवन के किसी न किसी मोड़ पर संभवतः आप भी रहे होंगे।

अब चूंकि इस स्तम्भ का नाम ही सीक्रेट डायरीज़ है, इसलिए इस डायरी की तस्वीरें क्लिक करने वाले और ये डायरी लिखने वाले, दोनों ही नाम गोपनीय रखे गए हैं।

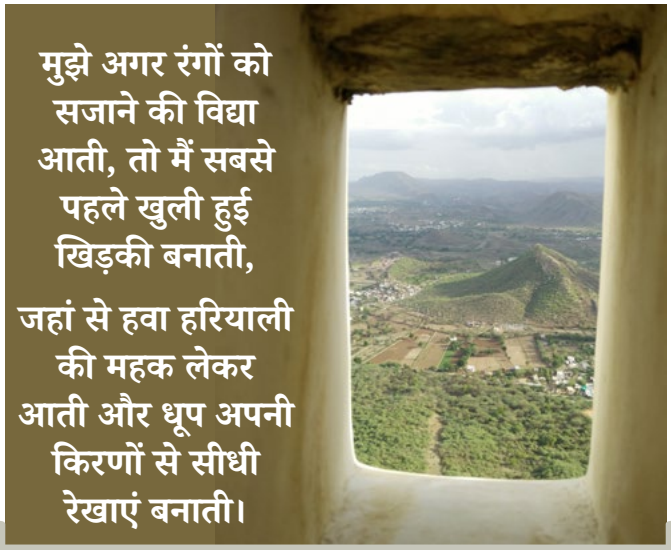

सुबह काम की जल्दी में जब हम दफ्तर आते हैं
उस गुलाबी पेड़ को हमेशा खिलता हुआ पाते हैं,
रफ़्तार, शिक्षा, रोज़गार और राजनीति जैसे लफ़्ज़
इसके खिलते रंग का कुछ भी न बिगाड़ पाते हैं।

ठेस लगे तो, भरोसा दोबारा नहीं होता,
हो भी जाए तो, सारा का सारा नहीं होता।

हर घड़ी यादों का इडियट बॉक्स होती है, और
दोबारा भरोसा नहीं, भरोसे की ज़ेरॉक्स होती है।

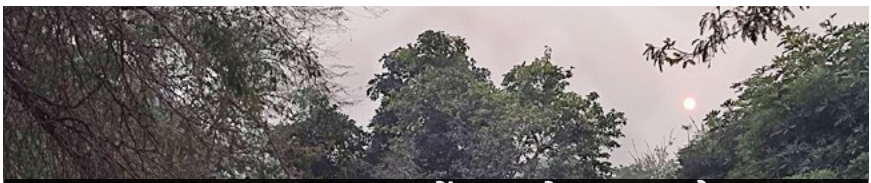

उगता हुआ सूरज हज़ारों काम लेकर आता है,
कई उम्मीदें, नई उमंगें और एक शाम लेकर आता है।
इंतज़ार करते हैं कई अपने शामें ख़ाली रखा करो,
ढलता हुआ सूरज कई इल्हाम लेकर आता है।

एक बैंकर की डायरी

बेचैनियों का बांध

इन दिनों छटपटाहट बहुत बढ़ती जा रही है। कहते हैं, छटपटाहट का बना रहना, इंसान के आगे बढ़ते रहने की महत्त्वाकांक्षा के लिए ज़रूरी होता है। लेकिन सोचता हूं कि ये छटपटाहट न तो आगे बढ़ने दे रही है और न ही मन को शांत होने दे रही है। कभी-कभी तो यह इतनी बढ़ जाती है कि सब छोड़-छाड़कर हिमालय की ओर निकल जाने का मन करने लगता है। फिर अपने भौतिक जीवन की तमाम ज़िम्मेदारियों को अहसास होता है और छटपटाहट बर्फ की तरह जम जाती है। बहुत कोशिश करता हूं, मन को समझाता हूं, लेकिन फिर कोई पंक्ति, कोई बात याद आती है और मन की सतह पर बर्फ पिघलने लगती है। जावेद अख़्तर की वह बात मन में बैठ गई है। उन्होंने लिखा है:

“मुझे अक्सर ये ख़याल आता है
कि मैं जितना कर सकता हूँ,
उसका आधा भी अब तक किया नहीं है,
और इस ख़याल की दी हुई बेचैनी जाती नहीं है।”

न तो ये बेचैनी जा रही है और न ही इस बेचैनी में कुछ कर पा रहा हूँ। कल राजकमल प्रकाशन समूह के सत्यानंद निरूपम ने एक ट्वीट किया। ट्वीट में अनुपम मिश्र के 2008 के आसपास के लेख “तैरने वाला समाज डूब रहा है” की याद दिलाई। 10 साल बाद इसे दोबारा पढ़ा। हर बार पढ़ने पर कुछ न कुछ नया निकल ही आता है। इसीलिए बहुत बार पुराना पढ़ा हुआ भी दोबारा पढ़ने की इच्छा होती है। अगर हम पढ़े हुए को कुछ वर्षों के अंतराल पर दोबारा पढ़ते हैं और उससे जुड़ पाते हैं या कुछ नया निकाल पाते हैं तो इसीलिए, क्योंकि हमारे जीवन के अनुभव बढ़ जाते हैं। हो सकता है कि दस साल पहले मेरे जीवन के अनुभव वैसे न रहे हों, जैसे आज हैं। इसलिए आज फिर उससे कुछ नया निकल आया। जब भी हम कुछ पढ़ते हैं या देखते हैं तो जीवन से कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में उसे जोड़ते हैं।

इसी लेख में की गई बात को मैं अपनी बेचैनी से, अपनी छटपटाहट से जोड़कर देखता हूँ। मैंने अपनी बेचैनियों का एक बांध बना लिया है। बांध बनाकर उन्हें इकट्ठा कर लिया है। अब अनुपम मिश्र की कही बात सही लगती है कि "बांध कितनी ही ईमानदारी और सावधानी से क्यों न बनाए गए हों, प्रकृति की छोटी-सी हलचल से दूर भी हो सकते हैं। और तब आज से कई गुना भयंकर बाढ़ हमारे सामने आ सकती है।" मैं सोचता हूँ कि अपनी बेचैनियों पर, अपने दिल की आवाज़ों पर यदि आज काम नहीं किया और बांध बांधता रहा, तो कहीं किसी प्राकृतिक हलचल से वह बांध टूट न जाए और किसी भयंकर बाढ़ का सामना न करना पड़ जाए।

ऐसा महसूस होता है, जैसे एक दरवाज़ा हल्का सा खुला हुआ है। उसमें एक छोटी-सी बेड़ी लगी हुआ है। मुझे बस उस एक बेड़ी को तोड़ना है और निकल जाना है। हर बार कोशिश करता हूं, लेकिन वो बेड़ी नहीं टूट पाती है। मैं दरवाज़े के इस ओर से उस ओर की दुनिया को देखता हूं और मेरी छटपटाहट बढ़ती जाती है।

क्या डिप्रेशन के भी रंग होते हैं?

हां डिप्रेशन भी बहुत रंगीन है
इसके अनुभव भी बड़े ही संगीन हैं
लोगों ने इसको नाम दिए कई
कोई बोला भ्रम है, किसी ने बोला बताओ कोई कहानी नई

मन ढेरों सवालों में घिरा होता
ऊपर से मुस्कुराहट का मुखौटा पहने रहता
तुम ठीक हो? पर केवल एक जवाब आता
हाँ हाँ सब बढ़िया, कहकर जो तुरंत विषय बदलना होता

वश में सोच नहीं रहती
हर छोटी बड़ी चीज़ दुखदायी लगती
सहनशीलता जब ज़ख्मी होती
जब आत्मसम्मान पर बार बार ठेस पहुँचती
तब यही दिमाग असमंजस में डाल देता
तब हर कोई अपना, पराये से भी पराया हो जाता

उम्मीद नाउम्मीदी के बीच द्वंद सा चलता रहता
पल में शूरवीर बनने का साहस आता
और पल भर में ही धराशायी कर जाता

रोज़ खुद को किसी युद्ध के मैदान के लिए
तैयार करना पड़ता
कोई कहता बहानेबाज़ी
तो कोई पागल होने का दर्जा तक दे जाता

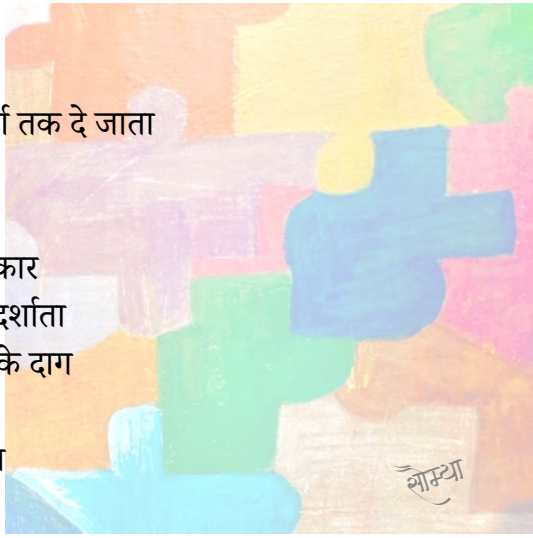

खुशहाली का रंग है पीला
या चेहरा है पीलेपन का शिकार
नीला आसमान की ऊंचाई दर्शाता
या है मन पर पड़े ढेरों नील के दाग
लाल प्यार का है प्रतीक
या पीड़ित अन्तर्मन की आग

सराबोर इन रंगों से ही
जज़्बात भाव और डिप्रेशन हैं मेरे यार
कोई माने न माने जैसे दाग़ अच्छे होते हैं कभी-कभी
वैसे ही रंगों को भी देर नहीं लगती रंग बदलने में, कभी-कभी।

सौम्या शुक्ला
प्रशासनिक अधिकारी, नई दिल्ली कार्यालय

सायमन की समझदारी

हम ग्यारहवीं कक्षा में थे। ज्यादातर स्कूलों की तरह हमारे यहां भी हर साल वार्षिकोत्सव का आयोजन होता था। समारोह के आयोजन के लिए मात्र एक महीना बचा था। समारोह की तैयारी के लिए एक छात्र-समिति का गठन किया जाता था, जिसका चेयरमैन परंपरानुसार सबसे मेधावी छात्र को बनाया जाता था। चेयरमैन की कुर्सी शक्ति और सम्मान का प्रतीक थी, सो सभी आकांक्षी होते थे। लेकिन यहाँ दसवीं की बोर्ड परीक्षा में जिला टॉप करके सायमन पहले ही अपनी दावेदारी प्रशस्त कर चुका था।

वैसे तो वरिष्ठ शिक्षक समिति द्वारा चेयरमैन का चयन अब महज़ औपचारिकता जान पड़ती थी, तथापि सायमन कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता था। किताबी ज्ञान में तो वह हम सबसे कोसों आगे था ही, मगर अध्यापकों को लुभाने के लिए वह अपने ज्ञान का बेतुका उपयोग करने लगा।

पांडेय जी गणित और भौतिक विज्ञान के प्रकांड पंडित थे। दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होकर हमारे विद्यालय में बतौर शिक्षक आए थे और शिक्षक समिति के अध्यक्ष थे। एक बार कक्षा में पढ़ाते हुए वृत्त के क्षेत्रफल को समझाने के लिए बोले, "पाई का मान 3.14159 के बराबर है, इसे 22/7 कहा जा सकता है"। इस पर सायमन ने टोका, "नहीं श्रीमान, पाई एक अपरिमेय राशि है, जो सरल भिन्न में प्रदर्शित नहीं हो सकती और यदि करना ही है तो 22/7 से 355/113 भिन्न अधिक सटीक है"। पांडेय जी कुपित हो उठे किन्तु चेहरे से ज़ाहिर नहीं होने दिया।

अभी दस-पंद्रह साल पहले तक ही ऐसी उद्दंडता के लिए थप्पड़ जड़ने की प्रथा थी। किन्तु अब दौर दूसरा था, सो मन मसोस के रह गए। अगली कक्षा भी पांडेय जी की ही थी।

तरंगदैर्घ्य को परिभाषित करते हुए बोले, "तरंगदैर्घ्य तरंग के समान कला वाले दो क्रमागत बिन्दुओं की दूरी है"। सायमन ने फिर टोका, "श्रीमान तरंगदैर्घ्य की यह एक सुस्त परिभाषा है। तरंगदैर्घ्य का उपयुक्त अर्थ वह दूरी है, जो एक तरंग अपने एक आवर्तकाल में पूरी करती है"। पांडेय जी का चेहरा देखने लायक था, किन्तु व्यवहारिक ज्ञान में शून्य सायमन, ऐसी धृष्टता को चेयरमैन बनने के प्रयास में सार्थक कदम मानता। इसका असर यह हुआ कि पांडेय जी भयाक्रांत हो उठे और अब पढ़ाते समय हर वाक्य बोलने से पहले पूरा गुणा भाग करते। फिर भी सायमन गाहे-बगाहे अपना मतभेद दर्ज कर ही देता।

वह दिन भी आ गया जब प्रधानाचार्य को प्रार्थना सभा में समिति द्वारा सुझाए छात्र परिषद् की उद्घोषणा करनी थी। सायमन सीना चौड़ा किए खड़ा था। जैसे ही चेयरमैन के लिए मनोज के नाम की घोषणा हुई, हम लोग दबी आवाज़ में खिलखिला उठे। सायमन को कोई पद न मिला था, तथापि समिति ने उसे अतिथि महोदय के स्वागत के लिए फूलों का ऑर्डर देने की ज़िम्मेदारी सौंपी। सायमन स्तब्ध था और मनीषी के ऐसे अनादर से व्यग्र हो उठा। अब वह कक्षा में चुप रहने लगा। पांडेय जी भी अब निर्भीकतापूर्वक व्याख्यान देते।

हम लोगों ने पहले तो इस प्रसंग का खूब रस लिया, लेकिन बाद में अंतरात्मा के संताप से बचने के प्रयास में इस प्रसंग को सायमन के भविष्य के लिए आवश्यक मानना शुरू कर दिया। समारोह से एक दिन पहले हमें दोपहर में ही अवकाश मिल गया, सो हम सब बाज़ार घूमने निकल गए। एकाएक हमारी नज़र बाज़ार में खड़े सायमन और पांडेय जी पर पड़ी। देखा तो दोनों किसी तर्क-वितर्क में उलझे जान पड़ते थे। उत्सुकतापूर्वक हम उनके कुछ पास गए, तो पता चला कि दोनों फूलों का आर्डर देने आए थे। सायमन गर्जा, "सर, अतिथि महोदय के आते-आते सूर्यास्त हो चुका होगा और रात में सफ़ेद गुलाब, लाल गुलाब की तुलना में अधिक उपयुक्त है"। हमसे रहा न गया और हमने ज़ोर के ठहाके लगाए। और वहां से भाग खड़े हुए।

"एलेग्जेंडर बैरन" की "द मैन हू न्यू टू मच" से प्रेरित

दीपिका पांडे
मुख्य प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

भारतीय रुपये का मिज़ाज

- जानिए, रुपये में गिरावट के कारण और इसके असर
- इस गिरावट को रोकने के लिए आरबीआई द्वारा किए गए प्रयास
- रुपये में निपटान की नई व्यवस्था का असर

व्यापक रूप से समझा जाता है कि अन्य मैक्रो इकनॉमिक मापदंडों के बीच, किसी भी अर्थव्यवस्था की ताकत को उसकी मुद्रा की ताकत के माध्यम से भी प्रदर्शित किया जाता है। यह भारतीय रुपये (₹) के लिए भी सही है। हाल के दिनों में अधिकांश मुद्राओं में यूएस डॉलर ($) के मुकाबले गिरावट आई है। रुपया भी अप्रभावित नहीं रहा; इसमें भी अस्थिरता आई है। हालांकि, कुछ अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राओं की तुलना में रुपये का मूल्यह्रास अपेक्षाकृत कम हुआ है।

दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राओं के मुकाबले रुपये का मूल्य बढ़ा है। ब्लूमबर्ग के आंकड़ों से पता चलता है कि G10 मुद्राओं और यूएस डॉलर के मुकाबले रुपया औसतन 2.79% बढ़ा है। 2015 में दर्ज 5.76% की बढ़त के बाद से यह सबसे तेज है। तो समझते हैं, रुपये के मूल्य को प्रभावित करने वाले कारकों और इससे जुड़ी अवधारणाओं को।

मूलभूत आधार: भारत 1993 में आधिकारिक तौर पर 'फ़िक्स्ड पेग' से 'बाजार-निर्धारित विनिमय दर' की ओर बढ़ा। यह 1990 के दशक की शुरुआत में उदारीकरण और विनियमन सुधारों का हिस्सा था। तब से, एक मुद्रा बाजार रहा है और भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) के अनुसार, रुपया बाजार द्वारा निर्धारित विनिमय दर का पालन कर रहा है, जिसका अर्थ है, रुपये की कीमत विदेशी मुद्रा की मांग और आपूर्ति से निर्धारित होती है।

आरबीआई डॉलर खरीदने या बेचने के लिए समय-समय पर विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप करता है। मूलतः यह हस्तक्षेप रुपये में स्थिरता बनाए रखने के क्रम में ही होता है।

मूल्यह्रास - अच्छा या बुरा?

सरकार की नीति, ब्याज दर, व्यापार संतुलन और व्यापार चक्र सहित विभिन्न कारणों से मुद्राओं में एक-दूसरे की तुलना में मूल्यवृद्धि / मूल्यह्रास होता है। कमजोर रुपये को सैद्धांतिक रूप से भारत के निर्यात को बढ़ावा देना चाहिए, लेकिन अनिश्चितता और कमजोर वैश्विक मांग के परिवेश में, रुपये के बाहरी मूल्य में गिरावट उच्च निर्यात में तब्दील नहीं हो सकती है। इसके अतिरिक्त, यह आयातित मुद्रा स्फीति का जोखिम पैदा करता है, और केंद्रीय बैंक के लिए ब्याज दरों को रिकॉर्ड निचले स्तर पर लंबे समय तक बनाए रखना मुश्किल बना सकता है। एक ऐसे देश के लिए, जो एक शुद्ध आयातक (जैसा कि भारत) है, कमजोर मुद्रा आयातित खाद्य तेल की कीमतों में और वृद्धि करेगी और उच्च खाद्य मुद्रास्फीति की ओर ले जाएगी।

रुपये में हुए हालिया मूल्यह्रास के 3 प्रमुख कारण

1 इक्विटी की बिक्री वैश्विक इक्विटी बाजारों में बिकवाली रुपये के मूल्यह्रास का उल्लेखनीय कारण बनी, जो अमेरिकी फेडरल रिज़र्व द्वारा ब्याज दरों में बढ़ोत्तरी, यूरोप में युद्ध और कोरोना वायरस के फैलने से चीन में विकास दर घटने की चिंताओं से शुरू हुई थी। ऐसे समय में जब वैश्विक स्तर पर मंदी की आशंका बढ़ रही है, अमेरिकी फेडरल रिज़र्व द्वारा ब्याज दरों में और अधिक बढ़ोतरी की आशंका और डॉलर का 'सेफ हैवन अपील', डॉलर को सभी प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले बढ़ने में कारगर साबित हो रहा है।

2 डॉलर का बहिर्वाह कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और इक्विटी बाजारों में सुधार, डॉलर के प्रतिकूल प्रवाह का कारण बन रहा है।

3 मौद्रिक नीति को कड़ा करना मुद्रास्फीति का मुकाबला करने हेतु, मौद्रिक नीति को कड़ा करने के लिए आरबीआई द्वारा उठाए गए कदम भी रुपये के मूल्यह्रास का कारण बने हैं।

अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित करता है रुपये का मूल्यह्रास?

सकारात्मक प्रभाव

- कमज़ोर मुद्रा निर्यातों को प्रोत्साहित कर सकती है।
- निर्यातों के सस्ते होने से निर्यात बढ़ने और आयात घटने से अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
- मुद्रा सस्ती होने के कारण प्रतिस्पर्धी हो सकती है और इससे विदेशी मांग बढ़ सकती है तथा देश का व्यापार घाटा कम करने में मददगार साबित हो सकती है।

नकारात्मक प्रभाव

- आयातित मुद्रास्फीति का जोखिम बनता है।
- आयात महंगा होने के कारण चालू खाता घाटा बढ़ने का जोखिम बन जाता है। विदेशी मुद्रा भंडार में कमी जैसी स्थिति भी सामने आ सकती है।
- कच्चे तेल और अन्य महत्त्वपूर्ण आयातों की ऊंची कीमतों के कारण अर्थव्यवस्था लागत-जन्य मुद्रास्फीति की ओर बढ़ने लगती है।

रुपये में गिरावट रोकने के लिए किए गए हालिया उपाय

भारतीय रुपये में गिरावट को रोकने के उपाय के रूप में आरबीआई द्वारा विदेशी मुद्रा प्रवाह को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसमें मुख्य रूप से निम्नलिखित उपाय शामिल रहे हैं:

1. विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिए, निवेश के लिए 'पूर्ण एक्सेसिबल रूट' के तहत 7 और 14 साल की सरकारी प्रतिभूतियों (मौजूदा 5, 10 और 30 वर्षों के अलावा) को शामिल कर 'विनिर्दिष्ट प्रतिभूति' बास्केट को विविधीकृत किया गया है। साथ ही, अल्पावधि प्रतिभूतियों (शॉर्ट टर्म सिक्योरिटीज़) में निवेश पर 30% की सीमा को हटा दिया है।

2. विदेशी मुद्रा उधार को उदार बनाया गया है। ऑटोमैटिक रूट के तहत ऋण सीमा को $750 मिलियन से बढ़ाकर $1.5 बिलियन कर दिया है। भारतीय बैंकों को FCNR (B) व NRE जमाराशियों को CRR व SLR की आवश्यकता के दायरे से छूट देकर तथा ब्याज सीमा को हटाकर अधिक एनआरआई जमा राशि जुटाने के लिए प्रोत्साहित किया है।

क्या हो सकता है इन उपायों का संभावित असर

इन उपायों की संबंधित समाप्ति अवधि है। इनसे विदेशी मुद्रा प्रवाह में अचानक वृद्धि हो जाएगी, ऐसी आशा रखना अतिशयोक्ति होगी। ये उपाय विदेशी मुद्रा प्रवाह को बढ़ावा देने के वर्तमान उद्देश्य को पूरा करने से अधिक, आरबीआई को केंद्रीय बैंक की अपनी इस भूमिका के निर्वाह में मददगार होगा कि वह अपने 'शस्त्रागार' में उपलब्ध सारे 'शस्त्रों' का उपयोग करने के लिए तैयार है। अनिश्चितता के समय में इस तरह के संकेतों का बाजारों पर सुखद प्रभाव पड़ता है।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार का सेटलमेंट भारतीय रुपये के माध्यम से : एक सही पहल

क्या भारतीय रुपये में निर्यात का चालान एक नई घटना है?

नहीं। नियामकों ने इसकी अनुमति कई वर्षों से दी हुई है। फिर, हमारे निर्यातक भारतीय रुपये में चालान क्यों नहीं कर रहे हैं? इसका मुख्य कारण यह है कि विदेशी समकक्ष रुपये में चालान से संभावित उतार-चढ़ाव का जोखिम नहीं लेना चाहते हैं। डॉलर आरक्षित मुद्रा, इस कारण भारत के निर्यात का 85% डॉलर में चालान किया जाता है, हालांकि अमेरिकी तटों के लिए केवल 15% निर्यात होता है।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने हाल ही में भारत में एडी बैंकों के साथ खोले गए भागीदार व्यापारिक देशों के कोरेस्पॉन्डेंट बैंकों के विशेष रुपया वोस्ट्रो खातों के माध्यम से भारतीय रुपये में अंतरराष्ट्रीय व्यापार के चालान, भुगतान और निपटान के लिए एक रूपरेखा तैयार की है।

- आरबीआई द्वारा एक बड़ी छूट यह दी गई है कि वोस्ट्रो खातों की अतिरिक्त आय को घरेलू संपत्तियों, यानी सरकारी बॉन्डों में निवेश किया जा सकता है। इससे पहले इस आय को तुरंत निवेश करना होता था।
- मुद्रा के अंतरराष्ट्रीयकरण की इस पहल को रुपये के चालान का दूरदर्शी उद्देश्य बताया जा रहा है।
- हालांकि, इसके लिए पूंजी खाता परिवर्तनीयता की दिशा

- हालांकि, अभी इसमें थोड़ी स्पष्टता की जरूरत है कि क्या इस छूट से निर्यातकों को रुपये के चालान में भाग लेने में अधिक दिलचस्पी होगी।
- चूंकि अब आयात का भुगतान रुपये में किया जा सकता है, इससे भारत-रूस व्यापार को बढ़ावा मिलेगा।
- रूस से रियायती तेल का भुगतान रुपये में किया जा सकता है, जिसका उपयोग रूस को भारतीय निर्यात के भुगतान के लिए किया जा सकता है।

में महत्त्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता होगी।

- इसमें यह भी देखना ज़रूरी होगा कि अन्य देश भुगतान और व्यापार का निपटान रुपये में करने और रुपये को आरक्षित मुद्रा के रूप में रखने में कितने इच्छुक हैं।
- बदले में रुपये को अब की तुलना में बहुत अधिक स्थिर होने की आवश्यकता है।
- किसी इकाई द्वारा रुपये की खरीद-बिक्री के लिए असीमित पहुंच ज़रूरी होगी, चाहे वह ऑफशोर हो या ऑनशोर।

गैर-भारतियों की रुपये में चालान की क्षमता और तत्परता, लंबी यात्रा है और आरबीआई द्वारा उठाया गया यह कदम, इस तरफ एक छोटा प्रयास है।

रंजन कुमार रॉय
सहायक महाप्रबंधक
ऋण-व्यवस्था समूह, नई दिल्ली कार्यालय

प्रेम, शक्ति और करुणा का रंग लाल

इस महिला दिवस बैंक की थीम रही लाल रंग

शीर्ष प्रबंधन से मिला अनुभवी मार्गदर्शन

रचनात्मक गतिविधियों, टेड टॉक से बना माहौल

विश्व आर्थिक मंच के अनुसार, लैंगिक समानता आज भी लगभग एक सदी दूर है। ज़ाहिर है यह अभियान आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतना ही ज़रूरी है, जितना इस पीढ़ी के लिए। बैंक इसकी महत्ता को समझता है और उत्साह से महिला दिवस मनाता है।

रौनक़ें जितनी यहाँ हैं, औरतों के दम से हैं

बैंक में 08 मार्च, 2022 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। महिलाओं के साहस और सम्मान का उत्सव। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय भूमिका निभाने वाली महिलाओं के जज़्बे को तसलीम करने का उत्सव। इस अवसर पर बैंक की महिला अधिकारियों के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं।

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल

बैंक में हर बार महिला दिवस पर एक विशेष रंग की थीम रखी जाती है। इस बार इसकी थीम रही- लाल रंग। वह इसलिए, क्योंकि लाल रंग बेशुमार भावों का प्रतीक है। यह जहां प्रेम, शक्ति और करुणा का प्रतीक है, वहीं ऊष्मा, बल और साहस को भी दर्शाता है। महिलाओं के मन के सभी गुणधर्मों और भावों को दर्शाने की क्षमता है इसमें। यूं ही थोड़े न लाल रंग प्रेम का प्रतीक कहलाता है।

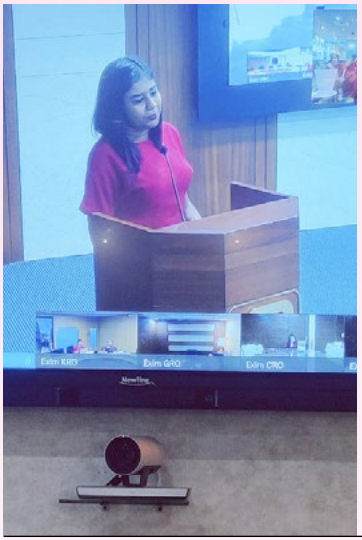

टेड टॉक: बैंक की प्रंबध निदेशक, सुश्री हर्षा बंगारी ने बैंक सभी महिला अधिकारियों के साथ चर्चा-परिचर्चा की। प्रबंधन प्रशिक्षु से प्रंबध निदेशक बनने तक के अपने सफ़र की कहानी साझा की। सभी महिला अधिकारियों की काम करते रहने की प्रेरणाओं को सुना और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर बैंक में नई भर्ती हुई महिला प्रबंधन प्रशिक्षुओं के लिए ख़ास तौर पर टेड टॉक रखी गई, जिसमें उन्होंने महिलाओं की वर्तमान स्थिति पर अपने विचार रखे। इस दौरान, नई दिल्ली कार्यालय प्रधान कार्यालय से वीडियो कॉन्फ्रेंस से जुड़ा रहा।

बोतलों में रंग भरे, बाद-ए-नौ-बहार चले:

महिलाओं के लिए एक रचनात्मक गतिविधि का भी आयोजन किया गया। इसमें महिला अधिकारियों ने बोतलों पर पेंटिंग की और उन्हें कई तरह की सामग्री से सजाया। इसके अलावा, महिला अधिकारियों ने एक मेमरी गेम भी खेला। और प्रधान कार्यालय द्वारा बैंक की सभी महिला अधिकारियों के लिए एक ऑनलाइन प्रश्नमंच प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें नई दिल्ली कार्यालय की सभी महिला अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

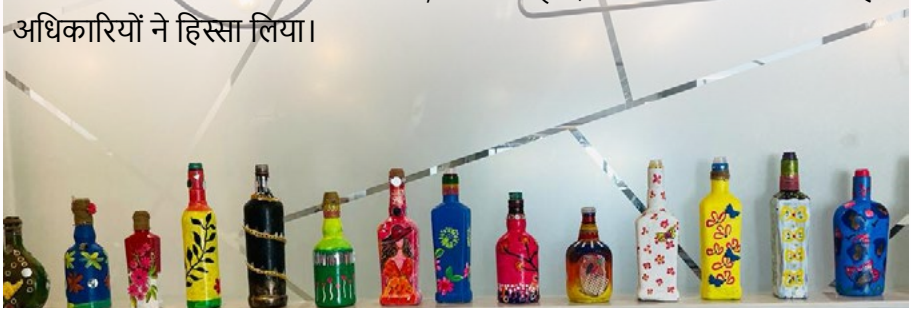

तिरे माथे पे ये आँचल बहुत ही ख़ूब है लेकिन, तू इस आँचल से इक परचम बना लेती तो अच्छा था

परचम तो वो बना चुकी थी, और अपने साथ वालों के परचम बनवाने की तरफ कदम बढ़ा रही थी। बहुत मुश्किल था, पर उसने ठान लिया और देखिए, आधी दुनिया ने मान लिया। अब अधिकारों की लड़ाई में एक बहुत बड़ा वर्ग उसके साथ है, और महिलाओं के सम्मान में समर्पित, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस भी मनाता है।

लेकिन इतना भी आसान कहां होता है औरत होना। हर मुश्किल को अपने ही रंग में छुपाकर, वो अपना-सा बना लेती है। उसने दुनियाभर की दलीलों और मिसालों को सुना तो सही, पर ख़ुद को कमतर नहीं आंका। उसने अपनी हर कमज़ोरी को अपनी ताकत बना लिया और बढ़ती चली गई। वो रोकने पर हर जगह रुकी तो ज़रूर, पर थमने के लिए नहीं, भरपूर सांस लेकर आगे बढ़ने के लिए। और जब चली तो सारे पर्वत, नदियों, तानों, शिकायतों, मुसीबतों, दिक्कतों को पार करती चली गई, चली जा रही है, चलती रहेगी।

बैंक में भी फहराया परचम

- मौजूदा समय में, बैंक के शीर्ष प्रबंधन में लगभग 42% महिला अधिकारी हैं।
- 2021 की शुरुआत तक, वित्तीय क्षेत्र में, दुनियाभर में केवल 27% महिलाएं हैं।

देश की महिलाओं के सशक्तीकरण में बैंक ने ऐसे दिया है योगदान

महिला सशक्तीकरण को ध्यान में रखते हुए, बैंक अपनी महिला ग्राहकों को भी आगे बढ़ने में सहयोग करता है। बैंक के ग्रासरूट उद्यम विकास (ग्रिड) कार्यक्रम के तहत महिला सशक्तीकरण के लिए कई पहलें की गईं हैं।

- बैंक ने अपने ग्रासरूट उद्यम विकास कार्यक्रम और मार्केटिंग सलाहकारी सेवाओं के ज़रिए कई महिला उद्यमियों को भी सहायता दी है।
- बैंक हस्तशिल्प व हथकरघा उत्पादों की विशेष प्रदर्शनी के रूप में एक्ज़िम बाज़ार आयोजित करता है। इसमें भी महिला बुनकरों को स्टॉल दी जाती हैं।

रुखसार आलम
प्रशासनिक अधिकारी, नई दिल्ली कार्यालय

ख़ुशियों के क्यूआर कोड

इस ख़ास पेशकश में हम लाए हैं ख़ुशियों के क्यूआर कोड। आपकी ये पत्रिका छमाही है, यहां छह क्यूआर कोड्स ही हैं। हर महीने एक क्यूआर कोड स्कैन करें और सारा महीना उस पर अमल करें, तो आधा साल ख़ुशहाल हो सकता है। एक-एक क्यूआर कोड को स्कैन कीजिए और बनाते रहिए ख़ुशियों का बैंक। यक़ीन मानिएगा, हर क्यूआर कोड के साथ आप ख़ुशी महसूस करेंगे।

1

2

3

4

5

6

हिन्दी का बढ़ता 'थ्रेड'

हिन्दी की लोकप्रियता तेज़ी से बढ़ रही है। ट्विटर से लिंक्डइन तक हर जगह हिन्दी बढ़ रही है। हिन्दी आज बाज़ार की मांग है। सुर्ख़ियां भी यही कहती हैं। एक नज़र, बढ़ते दायरे पर:

बिज़नेस हिन्दी में ही, हिन्दी से ही

- इंटरनेट पर सबसे ज़्यादा वीडियो हिन्दी में ही देखे जाते हैं।
- यूट्यूब पर कुल देखे जाने वाले वीडियो में से 54% हिन्दी में।
- बिज़नेस टुडे ने शुरू किया BT हिन्दी यूट्यूब चैनल।
- अब हिन्दी में भी मिलेंगी बिज़नेस की तमाम कहानियां।

मध्य प्रदेश में MBBS अब हिन्दी में

- मध्य प्रदेश में एमबीबीएस की पढ़ाई हिन्दी में शुरू हो गई है।
- इसके लिए एमबीबीएस की किताबें भी हिन्दी में बनाई गई हैं।
- एमपी और यूपी में इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिन्दी में भी होती है।

"सभी भाषाएं प्रधान हैं, पर हिन्दी सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाती है, इसलिए इसे महत्त्व देना जरूरी है।"

- उपराष्ट्रपति श्री एम. वैंकेया नायडू, हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में

- उन्होंने यह भी कहा कि प्रशासन की भाषा स्थानीय होनी चाहिए और शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए।
- साथ ही, यह भी सुझाया कि न्यायपालिका में प्रयोग की जाने वाली हिन्दी भी सरल होनी चाहिए।

अब "Linked"in में भी हिन्दी

- अब हिन्दी में बना सकते हैं लिंक्डइन प्रोफाइल। मौजूदा प्रोफाइल में जोड़ सकते हैं हिन्दी, अंग्रेजी पोस्ट का अनुवाद भी मिलेगा।
- लिंक्डइन को भी अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए हिन्दी में आना पड़ा।
- हिन्दी दुनिया की 25 भाषाओं में शामिल, जिनमें अब लिंक्डइन उपलब्ध है।
- भारत लिंक्डइन के लिए यूएस के बाद दूसरा सबसे बड़ा बाज़ार है।

शामियाना बनाने निकले, वो आशियाना बन गया

दिल्ली में काम करना देश के बहुत से हिस्सों के युवाओं का सपना हो सकता है। ये एक युवा की 'आपकही' है, जिसे दिल्ली में काम करने का अवसर मिला। इस युवा की आँखों से देखिए दिल्ली:

उफ्फ! अब से मुझे दिल्ली में काम करना होगा। मुझे याद है जब मुझे बैंक के नई दिल्ली कार्यालय से काम करने को कहा गया, तब मेरा पहला रिएक्शन ऐसा ही था। मैं इससे पहले कभी दिल्ली नहीं आया था। दिल्ली क्या, मैं उत्तर भारत ही नहीं आया था। लेकिन अब जाना तो था ही। बेमन होकर पैकिंग की और निकल आया।

दो घंटे कैसे गुज़र गए, पता ही नहीं चला। और हम मुंबई से नई दिल्ली आ गए। यहां सबसे पहले मैंने इंडिया गेट देखा। ऐसा लगा कि भारत का दिल यहीं है। इसी के साथ मुझे याद आया कि मैं इस ख़ूबसूरत जगह आने में हिचकिचा रहा था, और तुरंत मैं अपनी सोच को किनारे लगाने की कोशिश करने लगा। यहां कई सारी पुरानी बिल्डिंग और ऐतिहासिक इमारतों को देखकर मुझे दिल्ली के बारे में किताबों में पढ़ी चीज़ें याद आने लगीं। कितना ख़ूबसूरत और गौरवशाली इतिहास है यहां का। बस उसी वक्त मैंने सोच लिया कि इस ऐतिहासिक जगह को अब अच्छी तरह देखना है मुझे। घूमने का सिलसिला शुरू हुआ।

ख़ूबसूरत इमारतों वाले इस शहर का जादू मुझ पर चल चुका था। मैंने एक्सप्लोर करना शुरू किया, कभी दोस्तों ने मेरा साथ दिया तो कभी मैं अकेले ही चल दिया। जहां रहने के लिए घर मिला, वहां सबसे करीब था, अक्षरधाम।

अक्षरधाम मंदिर:

कितना सुंदर और शांत वातावरण है यहां। हमारे यहां (तेलंगाना) में भी एक अक्षरधाम है। मुझे यहां आने के बाद पता चला कि भारत में कुल 11 अक्षरधाम हैं। नई दिल्ली में बना स्वामीनारायण का यह मन्दिर 100 एकड़ भूमि में फैला है।

अक्षरधाम

12 मिनट में 10 हज़ार साल का सफ़र

मंदिर में स्टील और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं हुआ है। यह इतालवी संगमरमर से बना है। कमल के आकार में बना लोटस गार्डन बेहद शानदार है। इससे भी सुंदर है कल्चरल बोट राइड। 12 मिनट की ये सवारी भारत की शानदार विरासत के 10,000 वर्षों का सफ़र कराती है।

तक्षशिला से अजंता एलोरा तक के दिव्य दर्शन

नाव में बैठे हुए हम किनारे पर दोनों तरफ रखी मूर्तियां और मिनिएचर देख सकते हैं। यहां हमें भारत के ऋषियों-वैज्ञानिकों के आविष्कारों की जानकारी मिलती है। विश्व के प्रथम विश्वविद्यालय तक्षशिला से लेकर अजंता-एलौरा की गुफाओं तक की झलक भी मिलती है। आप नाव में बैठे-बैठे मंत्रमुग्ध से हो जाते हैं और फिर शाम का लाइट (लेज़र) शो आपके सुन्न पड़े दिमाग़ की बत्तियों को फिर से जला देता है। इसे लेज़र शो कहिए या शाम की आरती, पर यह निराला अनुभव है। कई रंग के लेज़र और पानी की लहरें बेहद ख़ूबसूरत आकृतियां बनाती हैं। पानी की तेज़ धार पर दिखाए जा रहे इस शो को अपलक देखते हैं। इसकी एक वजह यह भी है कि मंदिर में फोन ले जाने की अनुमति नहीं है, इसलिए लोग शांतचित्त और बिना ध्यान भटके इसके दिव्य दर्शन करते हैं।

रात के अंधेरे में धूप-सी उजली कुतुब मीनार

अगले हफ्ते कुतुब मीनार ने मन पर दस्तक देना शुरू कर दिया। और हमें जाना पड़ा। दिल्ली की सर्दी अपने उरूज़ पर थी, इसलिए ज़रा धूप निकलने का इंतज़ार किया और निकल गए। 60 मीटर ऊंची एक मीनार दिन में धूप सेंकते हुए जितनी सुंदर दिख रही थी, तब लगा नहीं था कि रात के अंधेरे में जब रौशनी होगी तो ये और भी ख़ूबसूरत हो जाएगी। दिल्ली की बाकी इमारतों की तरह यह भी लाल ईंटों से बनी है, फिर भी अपने आप में ख़ास है। इसके आसपास खाने के ठिकाने भी बहुत ख़ूब हैं।

लाल किलाः घुसो तो मुगलों की हाट, निकलो तो परांठे वाली गली

इस मंदिर को बनाने में किसी स्टील और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं किया गया है। इसे शुद्ध पत्थर और इतालवी संगमरमर से बनाया गया है। कमल के आकार में बना लोटस गार्डन बेहद शानदार है। इससे भी सुंदर है यहां की कल्चरल बोट राइड। 12 मिनट की ये सवारी भारत की शानदार विरासत के 10,000 वर्षों का सफ़र कराती है। नाव में बैठे हुए हम किनारे पर रखे दोनों तरफ मूर्तियों और मिनिएचर को देख सकते हैं। यहां भारत के ऋषियों-वैज्ञानिकों की खोज और आविष्कारों की जानकारी हमें मिलती है। साथ ही विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय तक्षशिला और अजंता-एलौरा की गुफाओं की झलक भी इसमें प्रदर्शित की गई है।

चिड़ियाघरः जहां आंखों के सामने घटित होती हैं बचपन की कहानियां

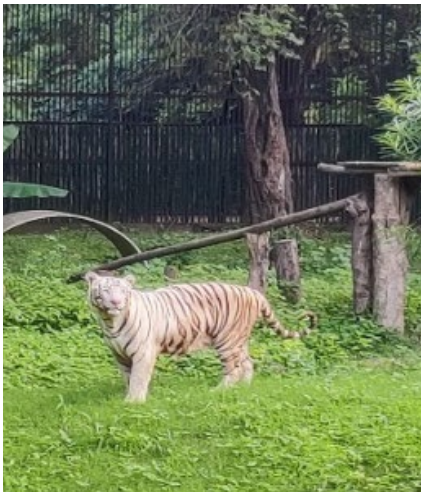

एक तो कम एंट्री फी, ऊपर से बेहतरीन जगह। एक शनिवार तो चिड़ियाघर के नाम बनता था। दुनियाभर के अद्भुत वन्यजीव हैं यहां। चिड़ियाघर काफी बड़ा है। लेकिन घबराने की ज़रूरत नहीं, बैटरी रिक्शे आपको बिना थकाए इसकी सैर करा देंगे। यहां आप शेर, चीते, बिल्ली आदि की अनगिनत प्रजातियों से मिल सकेंगे। सांपों के कई प्रकार यहां मिलेंगे। दरियाई घोड़े झुंड में नहाते दिखेंगे, हिरन और पक्षियों के समूह कलरव करते मिलेंगे। और भी बहुत कुछ है जो आपके हैरान कर देगा। बचपन में सुनी कहानियों को आप अपनी आंखों के सामने घटित होते देखेंगे और हर चीज को ख़ुद से जोड़ कर देख पाएंगे।

शाहजहां ने अपनी बीवी के लिए ताजमहल बनवाया, ये तो बचपन से सुन रहे थे, पर हमीदा बानो ने अपने शौहर के लिए हुमायूं का मक़बरा बनवाया, ये अब पता चला। जबकि ताजमहल इसके बाद और इसकी तर्ज पर बना है।

हुमायूं का मकबराः फारसी वास्तुकला का अद्भुत नमूना। स्पर्श के पिछले अंक में इसके बारे में पढ़ा था। तभी तय कर लिया था कि यहां तो ज़रूर ही जाना है और लिखना है।

शाम बनाती है और ख़ूबसूरतः इसकी सबसे ख़ास बात ये है कि शाम को इसकी ख़ूबसूरती दोगुनी हो जाती है।

वेस्ट टू वंडर थीम पार्क: जितनी ऊर्जा का इस्तेमाल, उतना ही उत्पादन

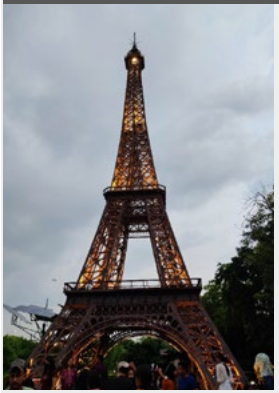

कबाड़ से अजूबा: इतिहास, प्रगति और आधुनिकता की जीती-जागती मिसाल है दिल्ली। ऐतिहासिक इमारतें देखने के क्रम में गूगल करते-करते हम जा टकराए एक नई थीम वाले पार्क से। 'वेस्ट टू वंडर'। पार्क बिल्कुल अपने नाम की तरह है। बेकार पड़ी सामग्री से बना, अद्भुत और ख़ूबसूरत। यहां दुनिया के सातों अजूबे मिलेंगे, पर इन्हें बनाने के लिए बेशकीमती सामान का उपयोग नहीं हुआ है। ये बने हैं, उद्योग जगत के इस्तेमाल में आए सामान में से बचे कबाड़ से।

स्वच्छ भारत अभियान की मिसाल: पर्यावरण-अनुकूल इस पार्क में सौर वृक्ष, सौर पैनल और पवनचक्की हैं। यहां जितनी ऊर्जा का इस्तेमाल होता है, उतनी ऊर्जा का उत्पादन भी होता है। सही मायने में आत्मनिर्भर भारत बनाने में असली प्रयास तो इसी तरह हो सकेंगे, बल्कि यह पार्क स्वच्छ भारत अभियान का भी अच्छा उदाहरण है। आप जब भी सराय काले खां जाएं तो ये पार्क ज़रूर देखें। यहां खाने-पीने का भी अच्छा इंतज़ाम है।

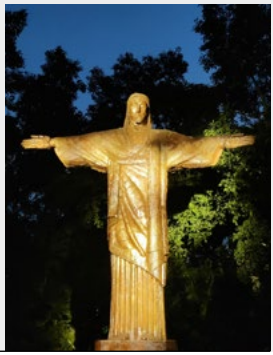

पिक्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त: दिल्ली से जाने का वक्त आ गया। लेकिन दिल ने याद दिलाया कि पिक्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त। अभी तो लोधी गार्डन, लोटस टेंपल, जंतर-मंतर, पुराना किला और न जाने क्या-क्या बच गया है। लौटेंगे तो एक बार फिर भारत के दिल 'दिल्ली' घूमने का सिलसिला शुरू होगा। मैं तो इस बात से ख़ुश हूं कि इस बार जब दिल्ली आऊंगा तो मन में हिचकिचाहट नहीं, एक्साइटमेंट होगा।

रामाकृष्णा
प्रबंधन प्रशिक्षु , नई दिल्ली कार्यालय

पाठकों के नोट्स : पंक्तियां जो मन पर अंकित हो गईं

कोई किताब पढ़ते-पढ़ते हम ऐसी पंक्तियां रेखांकित करते जाते हैं, जिनका स्पर्श मन पर अंकित हो जाता है या जिन्हें पढ़कर मन को सुकून मिलता है। आजकल किताबें ऑनलाइन भी पढ़ी जाती हैं। वहां हाइलाइट करने की सुविधा होती है और हम उन्हें फ़ोन या डायरी में लिखकर रख लेते हैं। फिर सुकून की तलाश में दोबारा उन तक पहुंचते हैं। हम साझा कर रहे हैं कुछ ऐसी ही पंक्तियां, जिनके ज़रिए आप उन सुंदर किताबों तक भी पहुंच सकते हैं, जिनसे ये पंक्तियां यहां आई हैं:

ठहरा हुआ समय

"जब हम जवान होते हैं, समय के ख़िलाफ़ भागते हैं, लेकिन ज्यों-ज्यों बूढ़े होते हैं हम ठहर जाते हैं, समय भी ठहर जाता है।

- निर्मल वर्मा, 'धुन्ध से उठती धुन' में

"मैंने अपने घर में कोई घड़ी नहीं लगाई है। मैं समय को अपने पर हावी नहीं होने देता। न समय के बंधन मानता हूं। मुझे मालूम है कि मेरे पास कितना समय शेष है। अब जितना भी है, वह मैं अपने हिसाब से तय करूंगा।

- संदीप नाईक, 'एकांत की अकुलाहट' शृंखला में (ऑनलाइन उपलब्ध)

"एक स्त्री से अगर आप सचमुच कह दें कि आप साफ़ अनुभव कर रहे हैं कि आपको उससे प्रेम है तो एक बार ही कहिए, पचास बार कहने की ज़रूरत नहीं।

- गगन गिल, 'दिल्ली में उनींदे' से

नेरुदा कहते थे, कविता कभी पूरी नहीं होती, बस एक जगह जाकर ठहर जाती है। मुझ जैसे तमाम कवि इस बात को महसूस कर सकते हैं। यात्रा ऐसी ही है। जब महसूस हुआ कि इससे आगे नहीं चला जा सकेगा, तब वहीं थककर बैठ गया। कविता वहीं 'पूरी' हो गई। एक दिन, ज़िंदगी भी ऐसे ही 'पूरी' हो जाएगी, भले असल में वह अधूरी ही रही।

प्रेम के दो पैर होते हैं। स्मृति और विस्मृति। प्रेम करने का अर्थ है, अपने व दूसरे के जीवन के कई पक्षों को बार-बार याद करना। प्रेम करने का अर्थ है, अपने व दूसरे के जीवन के कई पक्षों को हमेशा के लिए भूल जाना। बिना याद किए तुम प्रेम नहीं कर सकते। बिना भूले तुम प्रेम नहीं कर सकते। दोनों काम आते हैं। दोनों में संगति ज़रूरी है। ज़ाहिर है, दोनों पैरों में संगति न हो, तो तुम ढंग से चल भी नहीं पाओगे।

- गीत चतुर्वेदी, 'अधूरी चीज़ों का देवता' में

बाहर से जुड़ने की चाह में स्वयं कोई चोर दरवाजा बनाना पड़ता है, जिससे बिना झुके गुजरना संभव नहीं। कोई झिरी बनानी पड़ती हैं जहां से दो आंखें आज़ाद दुनिया को ताक सकें। क़ैद से मुक्ति के सपने बुन सकें। यह जानते हुए भी कि पूर्ण मुक्ति कभी संभव नहीं।

- निधि अग्रवाल, 'कुछ तो बता ज़िंदगी' में (ऑनलाइन उपलब्ध)

किंडल-किंडल बात चली है...

ज़िंदगी डिजिटल हो गई है। ऐसा क्या है, जो ऑनलाइन नहीं मिलता। फोन और लैपटॉप में दुनिया ही सिमट गई है। किसे पता था कि एक दिन किताबें ख़रीदने से पहले 'रखेंगे कहां' ये सोचने की ज़रूरत ही नहीं रह जाएगी। हज़ारों किताबें, कभी भी और कहीं भी साथ चलेंगी। इसका लाभ उठाते हुए, अधिकारियों को ऑनलाइन पढ़ने की सुविधा देने के उद्देश्य से बैंक ने ख़रीदे हैं किंडल संस्करण। अब आप किसी भी वक़्त हरिवंश जी को पढ़ सकते हैं और गुलज़ार साहब से मुलाक़ात कर सकते हैं। तो ये हैं इस बार के नए संस्करण। पढ़ते रहिए और लिखते रहिए...

महज़ एक विचार से पुरस्कार तक का सफर....

एक्ज़िम स्पर्श को पहले प्रयास में मिला है पहला पुरस्कार, हमें प्रोत्साहित करने के लिए दिल्ली बैंक नराकास का हृदय से आभार!!

इंडिया एक्ज़िम बैंक
India Exim Bank

ऑफिस ब्लॉक, टावर 1, 7 वीं मंज़िल, एड्जेसेंट रिंग रोड,
किदवई नगर (पूर्व), नई दिल्ली – 110 023

फोन : 91-11-2460 7700

वेबसाइट : www.eximbankindia.in | www.eximmitra.in